Year-4 Volume: III, July-September, 2022 Issue-15 ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

'किन्नर जीवन' विशेष सन्दर्भ 'मैं पायल...'

1. प्रिया सिंह
शोधछात्रा- पीएच.डी.
राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, अयोध्या, उ.प्र.
ईमेल: priyasingh91lko@gmail.com
2. शार्दूल विक्रम सिंह
एसोसिएट प्रोफेसर
जवाहरलाल नेहरु मेमोरियल पी.जी. कॉलेज, बाराबंकी, उ.प्र.

शोध सारांश

किन्नरों को अलग जगहों पर, अलग समाजों और भाषाओं में विविध नामों से सम्बोधित किया जाता है, जैसे- थर्ड जेंडर, हिजड़ा, तृतीय लिंगी, उभयलिंगी, यूनक, खोजवा, छक्का, शिखंडी आदि। महाभारत और रामायण के साथ-साथ प्राचीन ग्रन्थों और पौराणिक कथाओं में इसके प्रमाण प्राप्त होते हैं। किन्नरों का सबसे बड़ा दुर्भाग्य यह है कि समाज के लोग ही नहीं इन्हें त्यागते वरन स्वयं अपने परिवार वाले भी इनका परित्याग कर देते हैं। इन्हें अपनी मूलभूत आवश्यकताओं के लिए भी कठिन संघर्ष करना पड़ता है। ये अपना पालन-पोषण नाच-गाकर, बधाई देकर करते हैं। इन्हें जन्म से ही समाज द्वारा तिरस्कृत किया जाता है। समाज द्वारा इनको अपमानित किये जाने पर भी यह वर्ग सामान्य वर्ग से कहीं अधिक संवेदनशील होता है।

प्रस्तावना

हिन्दी साहित्य में उभयलिंगी समाज पर नीरजा माधव द्वारा लिखा गया 'यमदीप' (2002) में पहला उपन्यास माना जाता है। महेन्द्र भीष्म का उपन्यास 'किन्नर कथा' एवं 'मैं पायल', प्रदीप सौरभ का उपन्यास 'तीसरी ताली', 'सिर्फ तितली', निर्मला भुराड़िया का उपन्यास 'गुलाम मंडी', अनसूया त्यागी का उपन्यास 'मैं भी औरत हूँ', भगवंत अनमोल का उपन्यास 'जिंदगी 50-50', चित्रा मुद्गल का उपन्यास 'पोस्ट बॉक्स 203 नाला सोपारा' आदि इसके उदाहारण हैं।

महेन्द्र भीष्म द्वारा रचित उपन्यास 'मैं पायल...' 2016 में लिखा गया आत्मकथात्मक एवं जीवनीपरक लघु उपन्यास है। 120 पृष्ठों के इस उपन्यास में लेखक ने लखनऊ की किन्नर गुरु पायल सिंह के जीवन संघर्ष को आधार बनाकर कथानक का ताना-बाना बुना है। 'मैं पायल...' उपन्यास बहुत वस्तुपरक ढंग से, बेहद गहराई से और पूरी पारदर्शिता के साथ किन्नरों के जीवन की दुःखमय, त्रासद, पीड़ादायक और अमानवीय यातनाओं को बेबाक ढंग से हमारे सामने प्रस्तुत करता है। रोमांचित कर देने वाला, कटु यथार्थ! उपन्यासकार महेन्द्र भीष्म द्वारा पूरी कथा को पायल से सुनकर उपन्यास में इस प्रकार प्रस्तुत किया गया है।

Year-4 Volume: III, July-September, 2022 Issue-15 ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

महेन्द्र भीष्म के अनुसार, "मैं पायल... का आधार किन्नर गुरु पायल सिंह के जीवन संघर्ष की गाथा है। जिसमें प्रत्येक किन्नर के अतीत के संघर्ष की झलक परिलक्षित होती है। विस्थापन का दंश कष्टकारी होता है, फिर वह चाहे परिवार, समाज या अपनी मिट्टी से हो।"[1]

उपन्यास का आरम्भ होता है, "अम्मा बताती हैं, जब मैं पैदा हुई थी, 'रामबहादुर के एक और लड़की हुई।' एक अप्रिय सी आवाज उन्हें कानों में सुनाई दी थी। कारण मुझसे पहले लगातार मेरी तीन बड़ी बहिनें थीं, जबकि एक बेटे को जिसे वह अपनी कोख से जन्म दे चुकी थीं जो उन सबमें बड़ा था। मैं उनकी पाँचवी संतान एक हिजड़ा बच्चे के रूप में संसार में जन्म लेते ही उन्हें तमाम दुःख, कष्ट और संताप देने के लिए आ चुकी थी। सभी को इस बार उनसे बेटे के जन्म देने की पूरी-पूरी उम्मीद थी। उम्मीद तो पहली दीदी के बाद से ही थी। पर जब दूसरी, तीसरी और चौथी बार लगातार कन्या के जन्म लेने से अम्मा और उनकी कोख को गालियाँ मिलने लगी थीं। जैसे कन्या को जन्म देना उनके ही हाथ में हो, सारा दोष उन्हीं पर मढ़ दिया जाता और कोसा जाता रात और दिन। माँ, माँ होती है फिर चाहे उसकी संतान पुत्र हो या पुत्री वह उसे भरपूर चाहती है, उसकी चाहत में कोई भेद नहीं होता है।"[2]

उपरोक्त सन्दर्भ से लेखक ने यह स्पष्ट किया है कि माँ, माँ होती है, फिर चाहे उसकी संतान पुत्र हो या पुत्री उसे बहुत प्यार करती है, उसके प्यार में किसी भी प्रकार का भेद-भाव नहीं होता है।

पायल सिंह का जन्म लखनऊ कैण्ट स्थित आर्मी के कमाण्ड हॉस्पिटल में 26 अप्रैल, 1980 में दिन के 12 बजे हुआ था। इस उपन्यास की प्रमुख पात्र, क्षत्रिय परिवार में जन्म लेने वाली पायल उर्फ जुगनी, जुगनू जो किन्नर के रूप में जन्मी पाँचवी संतान है। नायिका के दादा श्री शिवदत्त सिंह भारतीय थल सेना में सूबेदार के पद से सेवानिवृत्त होते हैं। उनकी पेंशन और गाँव की खेती-बाड़ी से घर का खर्च निकलता था। जब नायिका छः वर्ष की थी तभी दाऊ बाबा का स्वर्गवास हो जाता है, इस कारण परिवार की आर्थिक स्थिति बिगड़ती जाती है।

विधि का विधान, जो पहले से नियत था उसे भला कब, कहाँ और कौन टाल सकता था? एक दिन जब पिताजी, भैया घर में नहीं थे बहिनों को पता नहीं क्या सूझी, मुझे जुगनी वाले कपड़े पहनाए, मेरे बाल संवारे, गालों पर पाउडर, होठों पर लिपिस्टिक और आँखों में काजल लगाकर मेरी चोटी गूँथ दी, जितनी भी बनी और सजा संवारकर अम्मा से बोलीं "देखो अम्मा अपनी जुगनी कैसी लग रही है? परियों के देश की राजकुमारी है न!"[3]

नायिका के पिता रामबहादुर सिंह के पास जमीन होते हुए भी पारिवारिक स्थिति अच्छी न होने के कारण पेशे से ट्रक ड्राइवर का कार्य करते हैं। "एक ट्रक ड्राइवर में जितनी बुराइयाँ होनी चाहिए वो सब मेरे पिताजी में मौजूद थीं। उनकी सबसे बुरी आदत दारू पीने की थी, उस पर हम बहनों पर चीखना, चिल्लाना, डाँटना और पीटना उनका शगल बन गया था। दारू के नशे में वह हमें इतनी बेरहमी से पीटते थे कि आज भी रूह काँप उठती है। अम्मा नाहक में हम बच्चों को बचाने या पक्ष लेने पर अक्सर पिट जाती थीं। नशे में पिताजी का चेहरा वीभत्स हो जाता, जो हाथ लगता उसी से पीटना शुरू कर देते थे तब तक जब तक वह टूट न जाय या स्वयं थक-हारकर नशे की झोंक में लड़खड़ाकर गिर न जायें।"[4]

उपन्यास के आरम्भ में जुगनी के जन्म के बाद पिता रामबहादुर सिंह को पता चल जाता है कि जुगनी (पायल) हिजड़ा या किन्नर है तो वह बहुत दुःखी हो जाते हैं। उनको समाज का डर ताने लगता है कि समाज के लोग

Year-4 Volume: III, July-September, 2022 Issue-15 ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

क्या कहेंगे? सब लोग मुझे हिजड़े का बाप कहकर पुकारेंगे या हिजड़े के बाप के नजरिये से देखेंगे। जुगनी की ऊँचाई लड़के की तरह होने कारण रामबहादुर सिंह उन्हें लड़के के रूप मैं देखना पसंद करते थे किन्तु जुगनी को लड़की की तरह रहना अच्छा लगता था। जुगनी लड़की की तरह जीना चाहती थी, क्योंकि उसके शरीर में लड़की की तरह बदलाव आ रहे थे। इसलिए जुगनी लड़की के कपड़े पहन लेती थी। जुगनी को लड़की के रूप में रामबहादुर सिंह देख लेता है तो वह अपनी पत्नी को कहता है- "कान खोलकर सुन ले कमलेश की अम्मा। अगली बार जब मैं आऊँ और यह साला हिजड़ा लड़की के कपड़े पहने मिला और घर के बाहर निकला, तो मैं अपने ही हाथों से इस साले का खून कर दूँगा।"[5]

रामबहादुर सिंह का मन जुगनी को इतना मारने-पीटने के बाद भी नहीं भरा तो जुगनी के गले मंे रस्सी बाँधकर उसके पैरों के पंजे ईटों के बने चट्टे पर टिक आए थे। लेकिन फिर भी जुगनी किसी तरह बच जाती है और जुगनी अपने मन को रोती-काँपती हुई कोसती है- ''क्षत्रियों के खानदान में हिजड़ा पैदा होने का जैसे सारा श्रये मेरा ही हो... मैं हिजड़ा हूँ... ठीक है, पर इसमें मेरा क्या कसूर? हिजड़ा होने में मेरी अम्मा बल्कि पिता जी का भी तो कोई दोष नहीं, फिर मेरे साथ ही ऐसा दुर्व्यवहार क्यों? लोग अपने विकलांग बच्चों को पालते हैं, पर एक हिजड़ा बच्चे को नहीं क्योंकि हिजड़ा बच्चा होने से वे अपनी आन-बान-शान के खिलाफ समझते हैं। क्षत्रियों में सिंह पैदा होते हैं, हिजड़े नहीं। उफ्फ पता नहीं क्या-क्या विचार मेरे दिल दिमाग में छाए रहे।"[6]

पिताजी के बाहर रहने पर अम्मा मुझे अपने पास ही सुलाती थीं। बाबा के न रहने के बाद से परिवार की स्थिति बद से बदतर होती चली गई। ट्रक ड्राइवरी से मिलने वाला आधा पैसा तो पिताजी की दारू पीने की बुरी लत में स्वाहा हो जाता था, जो थोड़ी-बहुत खेती थी उसकी बंटाई से साल भर के भोजन का इंतजाम हो जाता था। पायल कहती है- "सच कहूँ तो पिताजी मेरे हिजड़ा होने से और राकेश भैया की आवारगी से अंदर ही अंदर टूट रहे थे। बची-खुची कसर दारू की लत निकाल रही थी। वह चिड़चिड़े और क्रूर होते जा रहे थे। क्रोध में उनकी आँखें लाल हो जाती थीं और चिल्लाने पर मुँह से फिचकुर निकल आता था। चेहरा भयानक और वीभत्स हो जाता, किसी शैतान की तरह। उनका प्रतिरोध करने की किसी में हिम्मत नहीं थी। मुँह से विरोध की आवाज भी नहीं निकलती थी। बस उनकी मार को सहो और चुप रहो जब तक कि वे स्वयं मार-मारकर थक या बेदम न हो जायें।"[7]

मोना किन्नर की मृत्यु ज्यादा शराब पीने की वजह से हो जाती है। उसकी गद्दी पर उसका चापलूस ओझा बैठ जाता है, किन्तु किन्नर उसको समुदाय अस्वीकार करता है। पायल अशोक सोनकर के संदेहशील स्वभाव से तंग आकर उससे दूर हो जाती है। जब वह 'हिजड़ा' एवं 'छक्का' शब्द का इस्तेमाल पायल के लिए गाली के रूप में करता है, तब हद हो जाती है। सभी जगह पर पायल किन्नर है, ऐसी बातें बताने लगता है जिसके फलस्वरूप किन्नर समुदाय की तरफ पायल का मन आकर्षित हुआ। पायल का भी एक डेरा सोनी आदि किन्नरों का साथ होने से बन जाता है। पायल सिंह के नाम से लखनऊ माँ प्रतिष्ठित किन्नर गुरु बन जाती है।

किन्नर कहलाना किसी मर्द को अच्छा नहीं लगता, पिघला शीशा-सा कानों में उतरता है और किन्नर को हिजड़ा कहो तो उसको गाली-सी नहीं लगती, पर कहीं अंतस तक उसके मन में कचोट जरूर होती है, "आखिर ईश्वर ने उसके साथ अन्याय क्यों किया? क्यों हम उन्हें अपने से दूर सामाजिक दायरे से बाहर हाशिए पर रखते चले आ

Year-4 Volume: III, July-September, 2022 Issue-15 ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

रहे हैं? उनके प्रति हमारी सोच में अश्लीलता का चश्मा क्यों चढ़ा रहता है? किसी हत्यारोपी के साथ बेहिचक घूमने, टहलने या उसे अपने ड्राइंग रूम में बैठाकर उसके साथ जलपान करने से हम नहीं हिचकते हैं फिर किन्नर तो ऐसा कोई काम नहीं करता जो कि एक हत्यारोपी करता है तो हम किन्नरों से क्यों हिचकते हैं, आखिर क्यों? इस पर विचार करना होगा, उन्हें अपने साथ समाज की मुख्यधारा से जोड़ना होगा, उनका पूरा सम्मान करना होगा। उनके अनुसार उनके अनुरूप उन्हें रोजगार प्रदान कराने होंगे। वे भी हमारी तरह अपनी माँ की कोख से जन्मे अपने पिता की संतान हैं, वे ज्यादा नहीं माँग रहे हैं, 'हमें किन्नर नहीं, इंसान समझा जाए।' बस इतनी सी माँग है उनकी, वे समाज की मुख्यधारा से जुड़ना चाहते हैं। वे समाज में स्वयं की हिस्सेदारी चाहते हैं। देश के विकास में अपना योगदान सुनिश्चित करना चाहते हैं।"[8]

निष्कर्ष

"प्रत्येक किन्नर का अपना अतीत होता है। स्वयं का झेला संघर्ष होता है। परिवार से विस्थापन का दंश सर्वप्रथम उन्हें ही भुगतना पड़ता है।"[9] अपने परिवार के सदस्य से मिलने की तड़प रहती है। एक किन्नर के लिए यह बहुत सुखद बात है कि उसके बिछुड़े परिवार के लोग स्नेह से उनका हाल-चाल पूछें, अपने यहाँ आमंत्रित करें। अपना घर, अपने लोग किसे प्रिय नहीं होते।

महन्द्र भीष्म ने पायल सिंह के घर से विस्थापित होने से लेकर किन्नर गुरु बनने तक की संघर्ष गाथा का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत किया है। लेखक ने उपन्यास के माध्यम से किन्नर समुदाय की त्रासदी, भटकता एवं दिशा शून्य जीवन, किन्नरों के मन की दुविधाभरी स्थिति आदि को व्यक्त किया गया है।

सन्दर्भ

1- मैं पायल..., महेन्द्र भीष्म, पृ0 11 (प्रस्तावना)
2- मैं पायल..., महेन्द्र भीष्म, पृ0 13
3- वही, पृ0 35
4- वही, पृ0 20
5- वही, पृ0 36
6- वही, पृ0 39
7- वही, पृ0 33
8- वही, पृ0 123 (प्राक्कथन)
9- वही, पृ0 124 (प्राक्कथन)

***